स्वर्ग में हड़ताल

(कहानी)

10

नारद : नारायण! नारायण! अरे आज स्वर्ग में इतनी शांति कैसी? कोई आवाज नहीं ... कहीं कोई नजर ही नहीं आता। न सिंहासन पर बैठे इंद्र नजर आ रहे हैं और न नंदी और गणेश के साथ बैठे शंकर-पार्वती। ब्रह्माजी भी आज अपने कमल पर विराजमान नहीं हैं। चक्कर क्या है? कहीं पृथ्वी की तरह यहाँ पर भी चक्का जाम तो नहीं हो गया है?

(उन्हें एक गुफा के बाहर गणेशजी बैठे दिखाई पड़ते हैं। उनके सामने तख्ती रखी है जिस पर लिखा है आज स्वर्ग में हड़ताल है।

नारद : (चौंकते हुए) स्वर्ग में हड़ताल? हूँ.... यही कारण है जो चारों ओर सन्नाटा छाया है।

(नारद गणेशजी के पास पहुँचते हैं।)

नारद : जय हो! विघ्नविनाशक विनायक की। ..... पर आज आपके काम में विघ्न कैसे पड़ गया? (तख्ती की ओर इशारा करके) हड़ताल। इसका कुछ कारण और निवारण भी तो होगा प्रभु! कुछ तो बताइए।

गणेशजी : देखी नहीं यह तख्ती? मैं हड़ताल पर हूँ।

नारद : प्रभु! मैं आपके लिए लड्डू लाया हूँ। वह तो ग्रहण कीजिए। हड़ताल-वड़ताल तो होती रहेगी।

गणेशजी : हड़ताल यानी हड़ताल।

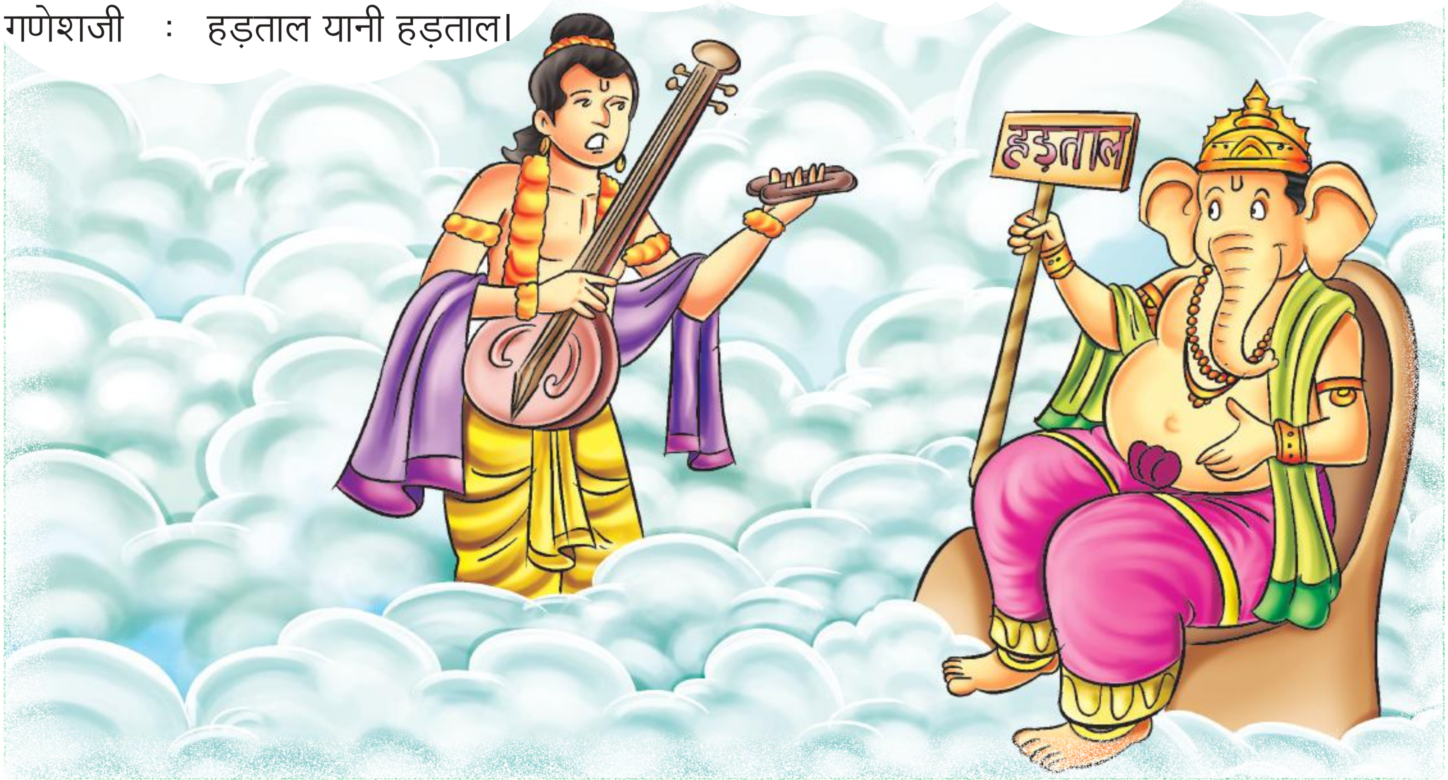

नारद : पर प्रभु, इस हड़ताल का कोई कारण भी तो होगा!

गणेशजी : सबके अपने-अपने अलग-अलग मुद्‌दे हैं। मेरा अपना अलग मुद्‌दा है।

नारद : (चौंककर) सब देवताओं के? ..... पर आपका क्या मुद्‌दा है प्रभु?

गणेशजी : पृथ्वीवासी मुझे लंबोदर कहते हैं। इस पर मुझे आपत्ति है।

नारद : पर .... आपका .... पेट कुछ बड़ा तो है ही ..... हें हें हें .....!

गणेशजी : (क्रोध से) कभी देखा है पृथ्वीवासियों को? वे स्वयं लालची तथा बेईमान हैं। उनकी लूटने, खसोटने, छीनने, बटोरने की आदत कभी भी नहीं मिटती। लंबे उदरवाले तो वे स्वयं हैं। मैं नहीं कहलाना चाहता लंबोदर, इसीलिए मैं हड़ताल पर हूँ।

नारद : नारायण! नारायण! आपका मुद्‌दा तो सचमुच में लाजवाब है! पर और देवताओं के हड़ताल पर जाने का क्या कारण हो सकता है? उन सबके तो बड़े अच्छे-अच्छे नाम हैं।

गणेशजी : यह तो आप उन्हीं से पूछिए।

(नारद गणेशजी के पास से उठकर राजा इंद्र के पास जाते हैं।)

नारद : दुहाई हो महाराज! आज कामकाज ठप्प क्यों हो गया है?

इंद्र : आज हम सब हड़ताल पर हैं, मालूम है न?

नारद : पर महाराज! आपका इतना सुंदर नाम है इंद्र सुनते ही मानो वीणा के तार झनझनाने लगते हैं। लगता है इंद्रधनुषी वर्षा की फुहार होने लगी हो। आपके हड़ताल पर जाने की वजह तो समझ नहीं आती।

इंद्र : (गुस्से से) तुम्हें अपने आसपास देखने से फुरसत हो, तो कुछ नजर भी आए। ये वर्षा ही मेरे हड़ताल पर जाने का कारण है।

नारद : वर्षा ही तो जीवन का आधार-जल देती है। इस वर्षा के कारण आप हड़ताल पर हैं!!!

इंद्र : हाँ, इसी के कारण। पृथ्वी पर मनुष्य जो अनाचार कर रहा है उससे सब कुछ प्रदूषित हो गया है। प्रदूषण से आसमान की नीली छतरी में छिद्र हो गए हैं और दुख की बात तो यह है कि अब जो बारिश मैं करता हूँ, अम्ल वर्षा के रूप में पृथ्वी पर गिरती है। मैं परेशान न होऊँ तो क्या करूँ?

नारद : अरे! इनके पास तो सचमुच एक मुद्‌दा है। दूसरे देवताओं के पास जाकर देखता हूँ। (घूमते हुए) आज स्वर्गलोक सचमुच में ही सूना है। इसलिए मधुर बंसी भी नहीं सुनाई पड़ती। क्या कृष्णजी भी हड़ताल पर हैं? पता लगाता हूँ।

(नारद कृष्णजी को ढूँढते हुए पहुँचते हैं, जो एक पेड़ के नीचे उदास बैठे हैं।)

नारद : जय हो! जय हो! देवकी नंदन! क्या आप भी हड़ताल पर हैं? पर प्रभु। यहाँ स्वर्ग में सारे आपके कदमों पर हैं। आपके हड़ताल पर जाने का भला क्या कारण है?

कृष्णजी : (क्रोध से) कैसा सुख? क्या हमारे पास हृदय नहीं है?

नारद : नाराऽयण! नाराऽयण! प्रभु आपका हृदय तो अत्यंत उदार है।

कृष्णजी : (गुस्से से) खाक उदार है। तभी तो मेरी प्रिय गाएँ, पृथ्वी पर प्लास्टिक खाकर मर रही हैं। मानव ने तो बस हद कर दी है। प्लास्टिक की थैलियों में फल, सब्जी के छिलके, कूड़ा-करकट साथ मिलाकर फेंक देता है। बेचारी भूखी गाएँ प्लास्टिक की थैलियाँ ही खा जाती हैं और मौत के मुँह में समा जाती हैं।

नारद : नारायण! नारायण! यह तो सचमुच में अनर्थ हो रहा है। नटवर नागर! आपके हड़ताल पर जाने का कारण भी एकदम सही है। चलता हूँ ..... चलता हूँ .... नाराऽयण ..... नाराऽयण।

नारद : (सोचते हुए) तो आज सारे देवता हड़ताल पर हैं। यानी देवियाँ आज खुशियाँ मना रही होंगी। चलूँ, जरा सिंहवाहिनी माँ दुर्गा के पाँव छूकर आऊँ। .... अरे! सन्नाटा तो यहाँ भी वैसा ही है। क्या देवियाँ भी हड़ताल पर हैं?

(नारद माँ दुर्गा देवी के पास पहुँचते हैं, जो एक पहाड़ी पर उदास बैठी हैं।)

नारद : जय हो देवी माँ, आज आप भी बैठी हैं खाली-खाली? ..... न सिर पर मुकुट और न कानों में बाली! .... लगता है आप भी हड़ताल पर हैं। पर देवी माँ! आपको इन चक्करों में पड़ने की क्या जरूत? देवता हड़ताल पर हैं, तो उन्हें होने दें .... अपनी पूजा-अर्चना तो न रोकें।

माँ दुर्गा : कैसे न करूँ हड़ताल? कभी तुमने कुछ जाँच-पड़ताल की है?

नारद : (हैरानी से) जाँच-पड़ताल! किसकी?

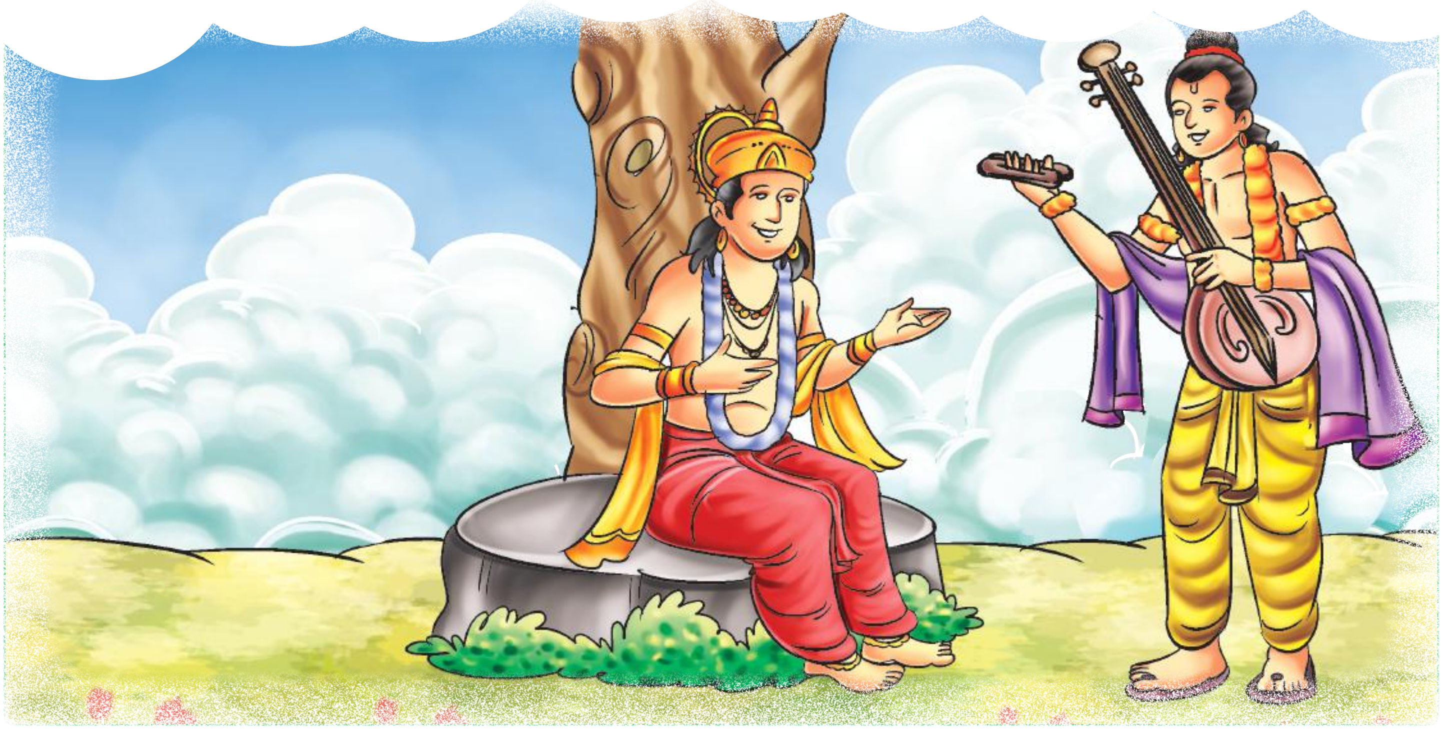

माँ दुर्गा : यही तो दुख है नारद! कहते हो स्वयं को विशारद, पर हो वहीं के वहीं।

नारद : (बौखलाते हुए) माफ कीजिए माँ! मुझसे क्या अपराध हो गया? गुस्सा थूककर साफ-साफ कहिए।

माँ दुर्गा : मेरे शेरों का धरती पर बुरा हाल हो रहा है। दिन-प्रतिदिन उनकी संख्या कम होती जा रही है। शेरों की खाल बेची जा रही है।

नारद : (सहानुभूति से) माँ! आपका कहना एकदम ठीक है। लेकिन इस समस्या का समाधान तो ढूँढना ही होगा। चलता हूँ ..... सृष्टि के जन्मदाता ब्रह्मा, पालक विष्णु और संहारकर्ता महेश के पास जाकर कोई उपाय देखता हूँ।

(नारद ब्रह्माजी के कक्ष में प्रवेश करते हैं। वहाँ ब्रह्मा, विष्णु तथा महेश चुपचाप बैठे हैं।)

नारद : नारायण! नारायण! त्रिदेव की जय हो! प्रभु! क्या आप तीनों भी हड़ताल पर हैं? पर आप सबके हड़ताल में जाने की कोई न कोई वजह तो होगी। (विष्णु से) प्रभु! अब आप ही कुछ बोलिए। आपने तो आप अपने नाभि कमल का भी त्याग कर दिया है ..... भला क्यों?

विष्णुजी : (उदासी से) बस करो नारद! मेरा कमल आज पृथ्वी पर मुरझा रहा है, कुम्हला रहा है।

नारद : कमल भला कैसे मुरझाएगा? वह तो खिलता ही है कीचड़ में। कीचड़ की भला पृथ्वी पर क्या कमी?

विष्णुजी : यही तो रोना है। मनुष्य फैक्ट्रियों के रासायनिक पदार्थों को पानी में छोड़कर जल और मिट्टी सभी को प्रदूषित कर रहा है। अब तो कीचड़ भी प्रदूषित है।

नारद : पर प्रभु! आप तो सृष्टि के रचयिता हैं। आप भी .....?

ब्रह्माजी : मैं तो क्या, मेरे अन्य सभी साथी ईसा मसीह, गुरुनानक आदि मनुष्य की मानसिकता को लेकर क्षुब्ध हैं। आज मानव की हिंसक और स्वार्थी प्रवृत्ति इतनी बढ़ चुकी है कि वह प्रकृति के संरक्षण की बात ही नहीं सोच पा रहा है।

नारद : पर प्रभु! क्या हड़ताल में जाने के अलावा कोई और उपाय नहीं है? ..... मनुष्य को चेतने का एक मौका तो दिया ही जाना चाहिए। कुछ तो सोचिए।

(ब्रह्मा, विष्णु और महेश सोचने लगते हैं।)

नारद : (शिवजी से) प्रभु! आप ही कुछ कीजिए। अपको याद है न जब देवताओं और दानवों में युद्ध हुआ था और समुद्र मंथन के बाद बँटवारा हो रहा था, तब आपने ही विष को अपने गले में रख लिया था और देवताओं की रक्षा की थी।

महेश : मुझे तो एक ही उपाय समझ में आ रहा है। धरती पर चारों ओर प्रदूषण का जहर फैला हुआ है। मनुष्य यदि खूब सारे पेड़ लगाए, तो पेड़ जहरीले वातावरण का सारा .

जहर खुद पी लेंगे और फिर स्वच्छ, प्राण देने वाली हवा दे देंगे। मनुष्य यदि पृथ्वी का आँचल हरे-भरे वृक्षों से भर दे तो उसके सारे कष्ट दूर हो जाएँगे और हमारी शिकायतें भी। तब वन्यप्राणी भी सुरक्षित रहेंगे और वातावरण भी।

नारद : नारायण! नारायण! खूब कही प्रभु! आपने तो वृक्षों को ही शिव का प्रतीक बना दिया जो ज़हर पीकर अमृत दे देते हैं। नाराऽयण! नाराऽयण! अब आप सब निश्िंचत होकर अपनी हड़ताल खत्म कर सकते हैं। पृथ्वी को हरा-भरा बनाने की जिम्मेदारी अब नई पीढ़ी उठाएगी। मैं अभी पृथ्वी पर आपका संदेशा लेकर जाता हूँ। नाराऽयण! नाराऽयण!

(यह कहकर नारद पृथ्वी की ओर चल देते हैं।)

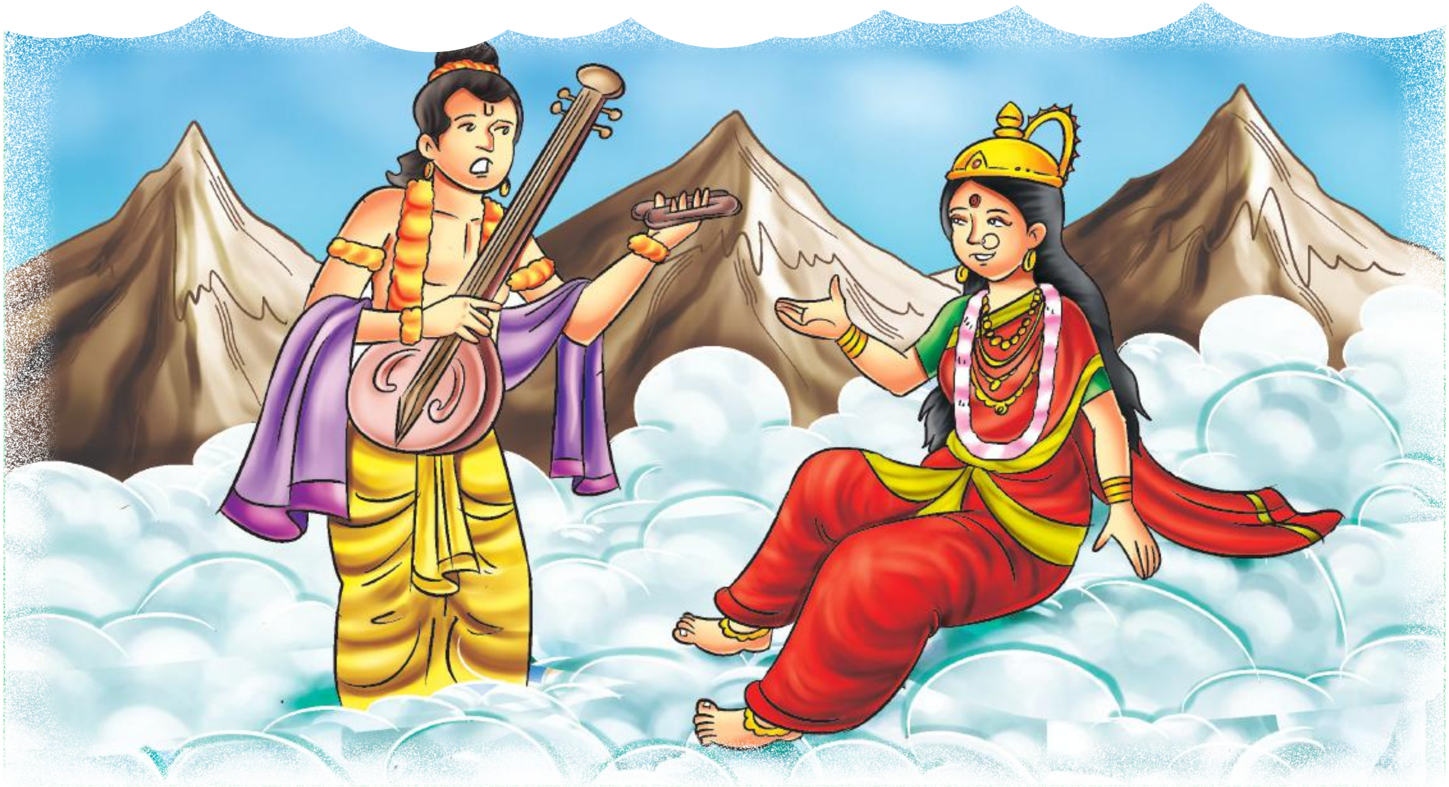

शब्द-अर्थ

सन्नाटा — शांति, चुप्पी *(silence)*,
विघ्नविनाशक — बाधाओं को दूर करनेवाला *(destroyer)*,
निवारण — दूर करना *(deterrence)*,
मुद्दा — विषय *(subject)*,
आपत्ति — एतराज *(objection)*,
उदर — पेट *(belly)*,
कक्ष — कमरा *(room)*,
रचयिता — रचना करनेवाला *(composer)*,
क्षुब्ध — परेशान *(trouble)*,
विशारद — उत्तम, श्रेष्ठ *(master)*,
अपराध — कसूर *(crime)*,
समाधान — हल *(concilation)*,
पालक — पालन करनेवाला *(abiding)*,
संहारकर्ता — नाश करनेवाला *(destroyer, disturbance)*,
फुहार — छोटी-छोटी बूँदें *(sprinkle)*,
अनाचार — बुरा कार्य *(malpractice)*,
प्रदूषित — गंदी हवा *(pollution)*,

प्रकृति — कुदरत *(nature)*,
संरक्षण — रक्षा करना *(defence)*,
दानव — राक्षस *(demon)*,
वन्यप्राणी — जंगल में रहने वाले जीव *(creature)*।
छिद्र — छेद *(hole)*,
अनर्थ — बुरा *(unpleasant)*,
जाँच-पड़ताल — छानबीन *(inquisition)*,

अभ्यास

मौखिक

1. इन शब्दों को पढ़कर सुनाइए—

स्वर्ग
मुद्दा
सिंहासन
आपत्ति
सन्नाटा
इंद्रधनुषी
विघ्नविनाशक
मनुष्य
लड्डू
प्रदूषण

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर मौखिक दीजिए—

(क) नारदजी किसके लिए लड्डू लेकर गए थे?
(ख) आसमान की नीली छतरी में किसके कारण छिद्र हो गए हैं?
(ग) किसने अपने नाभि कमल का त्याग कर दिया?
(घ) समुद्र मंथन के समय विष को अपने गले में किसने रख लिया था?

लिखित

1. सही उत्तर पर (✓) का निशान लगाइए—

(क) हड़ताल कहाँ पर हो रही थी?
☐ स्वर्ग में ☐ नरक में ☐ शहर में
(ख) नारद जी सबसे पहले किसके पास गए?
☐ दुर्गा माँ के ☐ गणेश जी के ☐ कृष्ण जी के
(ग) नारद जी की बात सुनकर किसे गुस्सा आ गया?
☐ ब्रह्मा को ☐ माँ दुर्गा को ☐ सभी को

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए—

(क) स्वर्ग में चारों ओर सन्नाटा क्यों छाया था?
(ख) गणेशजी का हड़ताल पर जाने का क्या कारण था?
(ग) इंद्र ने अपनी हड़ताल का क्या कारण बताया?
(घ) नारदजी की बात सुनकर कृष्णजी को गुस्सा क्यों आ गया?

(ङ) माँ दुर्गा की उदासी का क्या कारण था?

(च) महेशजी ने मनुष्य के कष्टों को दूर करने का क्या उपाय बताया?

भाषा-ज्ञान

1. नीचे दिए गए वाक्यों में सही समुच्चयबोधक चुनकर लिखिए–

इसलिए, लेकिन, और, तो

(क) ब्रह्मा, विष्णु .... महेश चुपचाप बैठे हैं।

(ख) मनुष्य यदि पृथ्वी का आँचल हरे-भरे वृक्षों से भर दे .... उसके सारे कष्ट दूर हो जाएँगे।

(ग) मैं नहीं कहलाना चाहता लंबोदर .... मैं हड़ताल पर हूँ।

(घ) आपका कहना एकदम ठीक है .... इस समस्या का समाधान तो ढूँढना ही होगा।

2. प्रत्येक पंक्ति में उस शब्द को चुनकर (✗) लगाइए, जो समानार्थी नहीं है–

(क) शेर	–	☐	सिंह	☐	कपि	☐	केसरी
(ख) समुद्र	–	☐	सरोवर	☐	रत्नाकर	☐	सागर
(ग) पृथ्वी	–	☐	जमीन	☐	गगन	☐	धरा
(घ) गणेश	–	☐	प्रजापति	☐	गणपति	☐	एकदंत
(ङ) महादेव	–	☐	शिव	☐	माधव	☐	पशुपति

3. नीचे दिए गए वाक्यों में शब्दों का क्रम ठीक करके लिखिए–

(क) अलग मुद्दा है मेरा अपना।

....

(ख) अत्यंत उदार है आपका हृदय।

....

(ग) खाल शेरों की जा रही है बेची।

....

(घ) मानव ने हद कर तो बस दी है।

....

क्रियात्मक गतिविधि

- इस नाटक का कक्षा में अभिनय कीजिए।
- हड़ताल के माध्यम से हम अपनी बात दूसरों तक पहुँचाते हैं। इसी कारण हड़ताल के लिए बड़े-बड़े पोस्टर तैयार किए जाते हैं। आप किसी समस्या को दिखाते हुए एक पोस्टर तैयार कीजिए।